



## INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

|          |                   |                             |
|----------|-------------------|-----------------------------|
| Class: X | Department: Hindi | Date :                      |
| QB       | Topic: तीसरी कसम  | Note: Pl. file in portfolio |

**प्रश्न 1 - 'तीसरी कसम' फिल्म को सेल्यूलाइड पर लिखी कविता क्यों कहा है ?**

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म विशेष रूप से भावपूर्ण फिल्म है। यह दिल को छू लेने वाली एक कहानी थी जिसे बड़ी ही सफलता के साथ कैमरे की रील में उतार कर चलचित्र द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस फिल्म में कविता की भावुकता, संवेदना और मार्मिकता भरी हुई है इसीलिए कहा जाता है कि 'तीसरी कसम' फिल्म नहीं बल्कि कवि शैलेंद्र द्वारा सेल्यूलाइड पर अर्थात् कैमरे की रील पर लिखी गई एक कविता है।

**प्रश्न 2 - 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे ?**

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराजू में नहीं तौला जा सकता था। इसमें कोई लोक-लुभावन मसाला नहीं था। इसीलिए 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार नहीं मिल रहे थे।

**प्रश्न 3 - शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है ?**

उत्तर - शैलेंद्र का दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य है कि वह उपभोक्ताओं की रुचियों को परिष्कार करने का प्रयत्न करे। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

**प्रश्न 4 - फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों कर दिया जाता है ?**

उत्तर - फिल्मों में अगर कहीं त्रासद अर्थात् दुखद स्थितियों का वर्णन किया जाता है तो उसको बहुत अधिक बड़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है। दुःख को इतना अधिक भयानक रूप से प्रस्तुत किया जाता है कि वो लोगो को भावनात्मक रूप से कमजोर कर सके और लोग ज्यादा-से-ज्यादा फिल्मों की ओर आकर्षित हो सकें।

**प्रश्न 5 - 'शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' - इस कथन से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर - राजकपूर को एशिया के सबसे बड़े शोमैन का खिताब हासिल था। वे अपनी आँखों से अभिनय करने और अपनी आँखों से ही भावनाओं को दिखाने में माहिर थे। इसके विपरीत शैलेंद्र एक उमदा गीतकार थे जो भावनाओं को कविता का रूप देते थे। शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं

को अपनी कविता और फिल्म की कहानी में शब्द रूप दिए और राजकपूर ने भी उनको बड़ी ही खूबी से निभाया।

**प्रश्न 6 – लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं ?**

उत्तर - राजकपूर एक सर्वाधिक लोकप्रिय अभिनेता थे और उनका अभिनय जीवंत था तथा दर्शकों के हृदय पर छा जाता था। दर्शक उनके अभिनय कौशल से प्रभावित होकर उनकी फिल्म को देखना और सराहना पसंद करते थे। राजकपूर की धूम भारत के बाहर देशों में भी थी। रूस में तो नेहरू के बाद लोग राजकपूर को ही सर्वाधिक जानते थे। इसीलिए लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है।

**प्रश्न 7 – ‘श्री 420’ के गीत - ‘रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ’ पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की ?**

उत्तर - ‘श्री 420’ के गीत - ‘रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ’ पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति की क्योंकि उनका ख्याल था कि दर्शक चार दिशाएँ तो समझ सकते हैं, लेकिन दस दिशाओं का गहन ज्ञान दर्शकों को नहीं होगा। सामान्यतः दिशाएँ चार ही कही जाती हैं और संगीतकार जयकिशन भी चार दिशाओं का ही प्रयोग करना चाहते थे।

**प्रश्न 8 – राजकपूर द्वारा फिल्म की असफलता के खतरों के आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फिल्म क्यों बनाई ?**

उत्तर - राजकपूर जानते थे कि ‘तीसरी कसम’ फिल्म शैलेंद्र की पहली फिल्म है इसलिए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। परन्तु शैलेंद्र तो एक भावुक कवि था, जिसको न तो अधिक धन-सम्पत्ति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल आत्मतृप्ति की कामना थी। ‘तीसरी कसम’ की मुख्य कहानी में जो भावनाएँ थी वे शैलेंद्र के दिल को छू गई थीं और वे इस फिल्म को बनाने का मन बना चुके थे।

**प्रश्न 9 – ‘तीसरी कसम’ में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हिरामन की आत्मा में उतर गया। स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर-राजकपूर एक महान कलाकार थे। फिल्म के पात्र के अनुरूप अपने-आप को ढाल लेना वे भली-भाँति जानते थे। जब “तीसरी कसम” फिल्म बनी थी उस समय राजकपूर एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे। उन्हें एक सरल हृदय ग्रामीण गाड़ीवान के रूप में प्रस्तुत किया गया। उन्होंने अपने-आपको उस ग्रामीण गाड़ीवान हिरामन के साथ एकाकार कर लिया। इस फिल्म में एक शुद्ध देहाती जैसा अभिनय जिस प्रकार से राजकपूर ने किया है, वह अद्वितीय है।

**प्रश्न 10-लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है ?**

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित है। शैलेंद्र ने इस साहित्य के सभी पात्रों, भावनाओं, घटनाओं को इस फिल्म में दर्शाया है। कहानी की छोटी-छोटी बारीकियाँ फिल्म में पूरी तरह से दिखाई गई हैं। शैलेंद्र ने मूल कथा को यथा रूप में प्रस्तुत किया है। इन सभी कारणों की वजह से लेखक ने लिखा है कि तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है।

**प्रश्न 11- शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषताएँ हैं। अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर - शैलेंद्र ने जो भी गीत लिखे वे सभी लोकप्रिय गीत थे। शैलेंद्र ने कभी भी दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अधिक महत्व देने वाले थे। उनके गीतों में करुणा के साथ-साथ संघर्ष की भावना भी दिखाई देती है। उनके गीत मनुष्य को जीवन में दुखों से घबराकर रुकने के स्थान पर निरंतर आगे बढ़ने का संदेश देते हैं। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था।

**प्रश्न 12- फिल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?**

उत्तर - फिल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र ने जीवन के आदर्शवाद एवं भावनाओं को इतने अच्छे तरीके से फिल्म 'तीसरी कसम' के माध्यम से सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया, जिसके कारण इसे सर्वश्रेष्ठ फिल्म घोषित किया गया और बड़े-बड़े पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया। राजकपूर की सर्वोत्कृष्ट भूमिका को शब्द देकर अत्यंत प्रभावशाली ढंग से दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया है। जीवन की मार्मिकता को अत्यंत सार्थकता को बड़ी ही तन्मयता के साथ पर्दे पर उतारा है।

**प्रश्न 13- शैलेन्द्र के निजी जीवन की छाप उनकी फिल्म में झलकती है-कैसे ? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर -शैलेंद्र एक आदर्शवादी, संवेदनशील और भावुक कवि थे। उनकी फिल्म 'तीसरी कसम' भी एक संवेदनात्मक और भावनापूर्ण फिल्म थी। शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई उनके निजी जीवन की विशेषता थी और यही विशेषता उनकी फिल्म में भी दिखाई देती है। इसके साथ-साथ फिल्म 'तीसरी कसम' में दुख को भी सहज स्थिति में जीवन सापेक्ष प्रस्तुत किया गया है। शैलेंद्र अपने जीवन में भी दुख को सहज रूप से जी लेते थे।

**प्रश्न 14 – लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फिल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, आप कहाँ तक सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर - शैलेंद्र ने ऐसी फिल्म बनाई थी जिसे सिर्फ एक सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था क्योंकि इतनी भावुकता केवल एक कवि के हृदय में ही हो सकती है। यह फिल्म कला से परिपूर्ण थी जिसके लिए इस फिल्म की बहुत तारीफ़ हुई थी। इस फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी

उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराजू में नहीं तोला जा सकता था।

**(15) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए**

क) .....वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार सम्पत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।

उत्तर - जब राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया तो शैलेन्द्र ने उनकी बात नहीं मानी क्योंकि शैलेन्द्र एक भावुक कवि थे, जिसको न तो अधिक धन-सम्पत्ति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल आत्मतृप्ति की कामना थी।

ख) उनका दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।

उत्तर - जब संगीतकार जयकिशन ने गीत 'प्यार हुआ, इकरार हुआ है, प्यार से फिर क्यों डरता है दिल' की एक पंक्ति 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' में आपत्ति जताई थी तब शैलेन्द्र इस पंक्ति को बदलने के लिए तैयार नहीं हुए। वे चाहते थे कि दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए।

ग) व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संकेत देती है।

उत्तर - शैलेन्द्र के गीतों में सिर्फ दुःख-दर्द नहीं होता था, उन दुखों से निपटने या उनका सामना करने का इशारा भी होता था। और वो सारी क्रिया-प्रणाली भी मौजूद रहती थी जिसका सहारा ले कर कोई भी व्यक्ति अपनी मंजिल तक पहुँच सकता है। उनका मानना था कि दुःख कभी भी इंसान को हरा नहीं सकता बल्कि हमेशा आगे बढ़ने का इशारा देता है।

घ) दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी।

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराजू में नहीं तोला जा सकता था।

० - उनके गीत भावप्रवण थे-दुरूह नहीं।-उत्तर - शैलेंद्र ने कभी दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अधिक महत्त्व देते थे। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रुसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी' -यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे, क्योंकि इसमें सच्ची भावना झलक रही है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था।